Research Paper ARTS

हिन्दी साहित्यकारों का 'बॉलीवुड' में योगदान

ROSHAN KUMAR

ABSTRACT

भारत में सिनेमा की शुरूआत 1913 में दादा साहेबफाल्के के 'राजा हरिश्चंद्र' से हुआ। तत्पश्चात भारतीय सिनेमा निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता चला गया। फिल्म निर्माताओं ने साहित्यकार की कृतियों पर तो फिल्में बनाई ही साथ-साथ उनसे फिल्मों के लिए कहानी,पटकथा,गाना आदि भी लिखवाए।इस कड़ी में सबसे पहला नाम प्रेमचंद का आता है। बेचन शर्मा 'उग्र',अमृतलालनागर,क मलेश्वर,राही मासूम रज़ारमेश बक्षी,अमृता प्रीतम,विनोद कुमार शुक्ल,गीतकार नीरज हिन्दी फिल्मों मेंअपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

KEYWORDS सिनेमा,हिन्दी साहित्यकार

प्रस्तावना-

भारत में सिनेमा का उद्भव 20वीं शताब्दी के प्रारंभ के साथ ही हो गया था। 1913 ई. में भारतीय फिल्मों के पितामह दादा साहेब फाल्के की पहली फिल्म "राजा हरिश्चंद्र" प्रदर्शित हुई।तत्पश्चात भारतीय सिनेमा निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता चला गया।14 मार्च 1931 को पहली बोलती फिल्म आलम आरा आयी। पिछले कुछ दशकों से विश्व के समस्त फिल्म निर्माताओं को साहित्य ने फिल्म निर्माण के लिए अपनी ओर आकर्षित किया। साहित्य का हिन्दी सिनेमा में रूपांतर तथा साहित्यकारों भी सिने जगत काम करने लगे। इस कड़ी मे हिन्दी साहित्य जगत से सबसे पहला नाम प्रेमचंद का आता है। हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यकार प्रेमचंद को 'अंजता सिनेटोन कम्पनी'ने 1933ई. में मुम्बई आंमत्रित किया।1932 में प्रेमचंद 'माधुरी' पत्रिका से हट गये थे और उनकी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी।उनका सरस्वती प्रेस घाटे में चल रहा था।इन परिस्थितियों को देखते हुए उन्होंने 'अंजता सिनेटोन कम्पनी' का निमंत्रण स्वीकार कर लिया।उन्होंने 1934ई. में 15 हजार वार्षिक अनुबंध पर सिनेटोन में पथकथा लेखन के रूप में नौकरी स्वीकार कर ली।बम्बई आने से पूर्व उन्होंने 'महालक्ष्मी सिनेटोन' से अपने उपन्यास 'सेवासदन' का अनुबंध किया था।निर्देशक नानूभाई देसाई ने इस उपन्यास पर 'बाजारे हुस्न'नाम से फिल्म का निर्मोण किया। इस फिल्म में प्रेमचंद के उपन्यास को बहुत तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया था। प्रेमचंद ने 'अंजता सिनेटोन'के लिए कहानी लिखी तथा उस पर 'गरीब मजदूर' 'मिल मजदूर', 'सेठ की बेटी' आदि नामों से फिल्म प्रदर्शित हुई।'मिल मजदूर' मोहन भावनानी के निर्देशन में बनी।फिल्म बनने के बाद जो स्वरूप सामने आया उसे देख प्रेमचंद को काफी धक्का लगा।उन्होंने कहा यह प्रेमचंद की हत्या है। 1941 में ए.आर. कारदार ने प्रेमचंद की कहानी 'त्रिया-चरित्र' को आधार बनाकर'स्वामी'नामक फिल्म बनाई।

बाद में उनकी कई कृत्तियों पर फिल्में बनी-'गोदान''दो बैलो की कथा', 'शतरंज के खिलाड़ी','सद्गति' गबन।'शतरंज के खिलाड़ी' और 'सद्गति' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।ये दोनों फिल्में सत्यजीत रे के निर्देशन में बनी। 'शतरंज के खिलाड़ी' का निर्माण 1977 में किया गया। 'सद्गति' एकघंटे की फिल्म है जिसे सत्यजीत रे ने दूरदर्शन के लिए बनाया गया। 'गबन' पर निर्देशक हर्षिकेश मुखर्जी ने इसी नाम से फिल्म का निर्माण किया।इधर गुलजार ने प्रेमचंद के उपन्यासों,कहानियों (गोदान, निर्मला, पूस की रात) आदि पर फिल्में बनाई है।

प्रेमचंद के बाद पंड़ित बेचन शर्मा 'उग्र' भी सिनेमा जगत में आये।उन्होंने 1935 में 'आजादी', 'रतनमंजरी' जैसी फिल्मों को लिखा। लेकिन वे भी वापस लौट गये। उसके बाद 1938 में भगवतीचरण वर्मा आए। भगवतीचरण वर्मा के लिखे उपन्यास 'चित्रलेखा' पर इसी नाम से1964 में केदार शर्मा के निर्देशन में फिल्म बनी। जिसकी पटकथा भगवतीचरण वर्मा ने ही लिखी। बाम्बे टाकीज में उन्होंने 'किस्मत' नामक फिल्म के संवाद लिखे।

अमृतलालनागर भी फिल्मों से संबद्ध रहे।उन्होंने बम्बई डिया आर्टिस्ट लि. संस्था में काम किया था। उनकी पहली फिल्म का नाम 'बहूरानी' था।उन्होंने लगभग बीस फिल्मों में काम किया।'राजा', 'कुवारा बाप' जैसी हिन्दी फिल्मों की पटकथाउन्होंने ही लिखी। उपेन्द्रनाथ अश्क ने सन् 1945 में 'मजदूर' तथा 'सफर' की पटकथा एवं संवाद लिखे।

1960 चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' पर इसी नाम से फिल्म बनायी गयी।आचार्य चतुर सेन शास्त्री के उपन्यास 'धर्मपुत्र' पर इसी नाम से निर्देशक यश चोपड़ा ने फिल्म का निर्माण किया।चतुर सेन शास्त्री के एक और उपन्यास 'वैशाली की नगर वधू' पर 1966ई. में 'आम्रपाली' नाम से फिल्म बनाई गयी।जिसका निर्देशन लेखटंडन ने किया।

कमलेश्वर ने अनेक फिल्मों की कथाएँ, पटकथाएँ एवं संवाद लिखी। 'सौतन की बेटी'(संवाद), 'लैला' (संवाद,पटकथा) 'यह देश' (संवाद), 'रंग-बिरंगी' (कहानी), 'सौतन'(संवाद),'साजन की सहेली' (संवाद), 'राम-बलराम'(संवाद,पटकथा) आदि फिल्मों में उन्होंने काम किया।कमलेश्वर के उपन्यास 'काली आधी' पर निर्देशक गुलजार ने 'आधी' नाम से फिल्म का निर्माण 1975ई. में किया।फिल्म का निर्देशन व पटकथा स्वयं गुलजार ने लिखी।कमलेश्वर के एक और उपन्यास 'आगामी अतीत' पर 'मौसम' नाम से गुलजार ने फिल्म बनाई। प्रेम कपुर ने कमलेश्वर के उपन्यास 'सात सड़क सत्तावन गलियाँ' पर 'बदनाम बस्ती' नाम से फिल्म बनाई। गरीशरंजन ने 'डाकबंगला' पर फिल्म बनाई।शिवेन्द्र सिन्हा ने कमलेश्वर की कहानी 'तलाश'पर 'फिर भी' शीर्षक से फिल्म बनाई।उन्होंने 'बर्निंग ट्रेन''अमानुष','आनंद आश्रम' जैसी फिल्मों की कथाएँ लिखी।

रमेश बक्षी का महत्वपूर्ण उपन्यास 'अट्ठारह सूरज के पौधे' पर अवतार कौल ने '27 डाउन' नाम से फिल्म बनाई।1966 में फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर बासु चटर्जी ने 'तीसरी कसम' नाम से फिल्म बनायी।इसके निर्माता गीतकार शैलेन्द्र है।इसके बाद बासु चटर्जी राजेन्द्र यादव के उपन्यास 'सारा आकाश'(1969) और मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर 'रजनी गंधा'(1974) नाम से फिल्म का निर्माण किया। जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' पर रमेश गुप्त ने फिल्म का निर्माण किया। सन् 1960 से1970 के दशक में गुलशन नंदा के उपन्यासों पर आधारित कुछ प्रमुख फिल्में यथा कटी पतंग,नीलकमल, खिलौना,शर्मीली बनी ।जिसे दर्शकों ने खुब सराहा।

राही मासूम रज़ा हिन्दी सिनेमा जगत में प्रतिष्ठित नाम है।उन्होंने करीब तीस हिन्दी फिल्मों के लिए कथानक, पटकथा तथा संवाद लिखे है।मैं तुलसी तेरे आँगन की ,माँग भरो सजना, एक ही भूल, डिस्को डांसर आदिफिल्मों के लिए पटकथा लिखी। आइना(1993), परम्परा(1992),लमहें(1991),कर्ज(1980),जुदाई(1980),हमपाँच(198 0),गोलमाल (1979), अलाप(1977) बात बन जाए (1986) आदि फिल्मों के लिए संवाद लिखे। अलाप के लिए रज़ा ने गीत भी लिखे।

फिल्मों के लिए कई कहानियाँ लिख चूके और फिल्में बना चूके कहानीकार राजेन्द्र सिंह बेदी की कृत्ति 'एक चादर मैली सी' पर भी फिल्में बनी।कुसुम अंसल के उपन्यास 'एक और पंचवटी'पर 'पंचवटी'

नाम से फिल्म बनी। निर्मल वर्मा की कहानी'मायादर्पण' पर कुमार साहनी ने फिल्म बनाई।इसके संवाद निर्मल वर्मा ने ही लिखे।इसे उस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म घोषित किया गया था।

हिन्दी साहित्य को सबसे अधिक महत्व मणिकौल ने दिया।उन्होंने 'उसकी रोटी' फिल्म का निर्माण किया जो मोहन राकेश के कहानी पर आधारित थी।मोहन राकेश का नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' पर मणि कौल ने फिल्म बनायी।मुक्तिबोध का 'सतह से उठता आदमी' और विनोद कुमार शुक्ल का उपन्यास 'नौकर की कमीज'पर इसी नाम से फिल्में बनाई। शैवाल की लिखी कहानी 'कालसूत्र' पर 'दामुल' नाम से प्रकाश झा ने फिल्म का निर्माण किया।

धर्मवीर भारती का उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' पर इसी नाम से निर्देशक श्याम बेनेगल ने 1992 ई. में फिल्म बनाई।राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम इस फिल्म का निर्माता है। अमृता प्रीतम की लिखी उपन्यास 'पिंजर'पर निर्देशक डॉ. चन्द्रप्रकाश द्विवेदी ने इसी नाम से फिल्म बनाई।

नरेन्द्र शर्मा ने बाम्बे टाकीज की फिल्म 'बंधन' में पहली बार गीत लिखे।उन्होंने मेरा सुहाग, नरसिंह अवतार, भाभी की चूड़ियाँ, तथा सत्यं शिवं सुदरम् जैसी हिन्दी फिल्मों के लिए गीत लिखे। हरिवंश राय बच्चन ने अलाप, मिली, सिलसिला, फिर भी आदि फिल्मों के लिये गीत लिखे। गीतकार नीरज हिन्दी फिल्मों को अपने शब्द दिये। नई उमर की नई फसल,प्रेमपुजारी, तेरे मेरे सपने, मंझीली दीदी, मेरा नाम जोकर, गैबलर आदि के गीत उन्होंने ही लिखे।

REFERENCES

सहायक पुस्तक :- | हिंदी सिनेमा: बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक ,संपादक प्रहलाद अग्रवाल ,साहित्य भंडार इलाहाबाद, 2009 | पत्रिका- | हंस ,वर्ष 27,अंक 7 फरवरी 2013 | बहुवचन,अंक 39 अक्टूबर -दिसम्बर 2013 |